

आ गये हैं गणपति. सवारी मूषा वाली ॥२॥

हंस पे. ब्रम्हा जी आये, विष्णु गरुड़ पे धाये
बृष पे शंकर जी आये, करन रखवाली

आ गये हैं.....

इंद्र दौड़े चले आत, अप्सरा भी गान गात
नाचत सब इनके द्वार-दे-दे के ताली

आ गये हैं.....

डुमक-डुमक चलत जात, गौरा इनखों मनात
हाथ होड़ भगत जात, चाल है मतवाली

आ गये हैं.....

भूख जब इनखों सतात-चूहा संगे दौड़ जात
सूँड़ खों अपनी हिलात. देख लड़ुआ थाली

आ गये हैं.....

जो भी शरण में जात. सिद्धि-सिद्धि साथ लात
बुद्धि के दाता हैं-हृई है लाली

आ गये हैं.....

दीनन की लाज रखत. दौड़ खे जे काज करत
चरण में "श्री बाबा श्री" पड़े दैयो खुशचाली

आ गये हैं.....